प्रभु हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह का नाम धन्य हो! शास्त्र हमें बताती है कि यीशु मार्ग, सत्य और जीवन हैं, और कोई भी पिता के पास केवल उसी के द्वारा ही पहुँच सकता है। इसका मतलब यह है कि स्वर्ग तक पहुँचने का कोई और रास्ता नहीं है सिवाय यीशु मसीह के। इसलिए जब हम स्वर्ग की बात करते हैं, तो हम प्रभु यीशु की बात कर रहे हैं। वह द्वार और कुंजी हैं स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए (यूहन्ना 10:9-16)।

प्रभु की कृपा से आज हम भ्रामक सत्य के बारे में सीखना चाहते हैं। हर सत्य जो प्रचारित किया जाता है, जरूरी नहीं कि वह व्यक्ति को सही मार्ग पर ले जाए… कुछ सच्चाइयाँ तो भ्रम फैलाने के लिए होती हैं! इसलिए कुछ सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं, और कुछ भ्रम में डालते हैं।

आइए निम्न उदाहरण देखें:

प्रेरितों के काम 16:16-18

“और जब हम प्रार्थना के स्थान की ओर जा रहे थे, तो एक कन्या
हमसे मिली, जिसमें भविष्य बताने की आत्मा थी, और वह अपने स्वामियों को बहुत लाभ पहुँचाती थी। यह कन्या पौलुस और हमारे पीछे-पीछे चलती और चिल्लाती, ‘ये लोग सर्वोच्च ईश्वर

के सेवक हैं, जो तुम्हें उद्धार का मार्ग बताते हैं।’ यह कई दिनों तक करती रही। लेकिन पौलुस क्रोधित हुआ, मुड़ा और
आत्मा से बोला, ‘मैं तुम्हें यीशु मसीह के नाम में आदेश देता हूँ, इससे बाहर निकलो!’ और उसी समय वह बाहर चली गई।”

इस घटना में पौलुस और उनके साथी उस कन्या से मिले, जो भविष्य बताने वाली आत्मा से प्रभावित थी—हम कह सकते हैं कि वह उस समय की तरह एक “चिकित्सक” या भविष्यवक्ता थी। जब उसने पौलुस को देखा, तो जोर से चिल्लाई, “ये लोग सर्वोच्च ईश्वर के सेवक हैं, जो तुम्हें उद्धार का मार्ग बताते हैं।” उसने यह शब्द पौलुस से सीधे नहीं कहे, बल्कि आसपास के लोगों से कहा।

लेकिन पौलुस परेशान क्यों हुए और तुरंत आदेश दिया कि आत्मा बाहर निकल जाए? कोई सोच सकता है कि उन्हें खुशी होनी चाहिए थी कि सत्य कहा गया और यह सार्वजनिक रूप से साबित हुआ कि वे ईश्वर के सेवक हैं। लेकिन पौलुस शैतान की मंशा को जानते थे।

यदि पौलुस ने उन शब्दों को स्वीकार किया होता, तो हो सकता है कि कन्या लोगों से अधिक भरोसा और सम्मान प्राप्त करती—लोग उसकी क्षमताओं पर विश्वास करते, न कि ईश्वर के सेवकों पर। यही शैतान का उद्देश्य था—ईश्वर की महिमा को कम करना और लोगों को भ्रम में डालना।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

ठीक उसी तरह जैसे एक चतुर व्यापारी ग्राहकों को आकर्षित करता है: वह पहले सत्य देता है, लेकिन अंत में ध्यान स्वयं उसकी ओर जाता है, उत्पाद या स्रोत की ओर नहीं। इसी प्रकार बुरे आत्मा भी धोखे से “यश” पाने की कोशिश करते हैं।

लेकिन पौलुस तुरंत कार्य करते हैं, और जब आत्मा बाहर चली गई, तो ईश्वर की शक्ति प्रकट हुई। सभी ने देखा कि कन्या की शक्ति, पौलुस और उनके साथियों में ईश्वर की शक्ति के सामने कम थी—शैतान की योजना विफल हो गई।

इसलिए हर सत्य जो कहा जाता है, उसका उद्देश्य अच्छा नहीं होता। यही कारण है कि यीशु अक्सर आत्माओं को खुलकर बोलने से रोकते थे, भले ही वे सत्य बोल रहे हों (मत्थाई 16:23)।

एक और उदाहरण: आदम और हव्वा के बगीचे में, सर्प ने हव्वा से सत्य कहा, “यदि तुम फल खाओगी, तो तुम ईश्वर जैसे बनोगी और भला-बुरा जानोगी।” यह सत्य था—लेकिन एक भ्रामक सत्य, जिसने मृत्यु और विनाश लाया। यह दिखाता है कि सही शब्द भी हानि पहुँचा सकते हैं, अगर उनका उद्देश्य गलत हो।

शैतान अक्सर अभिमान और आत्म-संस्कार के बीज बोता है, यहाँ तक कि ईश्वर के सेवकों के हृदय में भी, उन्हें गिराने के लिए।

इसलिए बाइबल हमें सतर्क रहने की चेतावनी देती है: आत्माओं का परीक्षण करो, केवल बाहरी दिखावे पर नहीं, बल्कि उनके आंतरिक उद्देश्य और उनके द्वारा प्रस्तुत फलों पर ध्यान दो (1 यूहन्ना 4:1)।

प्रभु आपको आशीर्वाद दें।
हमारे व्हाट्सएप समुदाय में शामिल हों >> WHATSAPP

Share on:
WhatsApp